भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-16, अंक-3-4 सोमवार, 26 अप्रैल.' 93	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी मार्च, अप्रैल, 1993	वार्षिक चन्दा-30.00 प्रति अंक : 3.00

अमृतसेतु

[हम सब के प्यारे प्रभु प.पू. काकाजी का अमृत महोत्सव (75वीं जन्म जयंती) का महामंगलकारी वर्ष—'1993' चल रहा है.... हमारे भाग्य का तो पार नहीं कि रोम-रोम में भगवान प्रकटाये परम पवित्र पुरुष गरजू बनकर हमारे जीवन में आ गये....हमें अपनी गोद दी और उनके संग जीवन जीये !!...कैसे ऋण चुका भी पायेंगे इनका?

पू. काकाजी के निम्नलिखित दो आंशिक पत्रों से ही स्पष्ट होताहै कि हमें कैसी भव्य प्राप्ति हुई है....और इनके संबंध में आने के बाद हमें क्या करना है? और इससे भी अधिक—कैसी कल्पना से परे की प्रीति होगी हम सबसे उनकी? कितना अपना माना होगा हमें—जो ऐसा सचोट व स्पष्ट मार्गदर्शन हमारे लिए खुला रख दिया कि आज भी यदि करने लग जायें तो परम सुखी हो जायें व देह रहते हुए अक्षरधाम का सुख-शांति, आनंद प्राप्त करें.....

आईये, हम सब मिलकर इस रहस्य का मनन चिंतन करके समझने का प्रयास करें। इन वाक्यों को अपने जीवन का आधार बना लें ताकि 'अमृत महोत्सव' तक में प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों हमारी सब कसर टाल कर हमारी साधना की पूर्णाहुति करा देवें....यही अंतर की आरजु.....]

❑ .....मुझे तो
पू.बापा ने अनुपम ही पसंदगी में चुना था,
सो,
सर्वांगी विकास में और सर्वोच्च ब्रह्मीस्थिति में
तकलीफें बाधारूप नहीं बनी
और
मूल रहस्यों गौण नहीं हुए–
अक्षरपुरुषोत्तम उपासना
व
जीव को ब्रह्मरूप करके परब्रह्म में जोड़ने के मूल उद्देश्य में सहज स्थिति व सिद्धि पू. बापा ने दे दी.....
जिससे
सभी भूमिकाओं में अखंड शांति और आनंद रहा....

स्वीट्जरलैंड, 15-7-'77

❑ **गुरु** बहुत होते हैं,
परन्तु
❑ ❑ **सद्गुरु** कम।
और
सच्चा सद्गुरु तो शायद ही मिले
और
मिल भी जाये तो–
उसके जोग में रहना कठिन।
यदि रहें भी, तो–
अखंड दिव्यभाव रखना कठिन।
❑ शब्द द्वारा परमात्मा के स्वरूप के ज्ञान का उपदेश करे वह गुरु।
❑ ❑ सभी में परमात्मा का दर्शन कराये वह **सद्गुरु**।
वह भी रखें तो–
स्वभाव टाल कर टिकना कठिन।
वह भी कर लें तो–
उसकी अनुवृत्ति में रहना कठिन।
वह भी हो जाये, तो–
उसके अभिप्राय की भक्ति करनी कठिन।
और
वह भी हो, पर–
भिन्न-भिन्न प्रकार के–भिन्न रुचि वाले मुक्तों
के साथ
दिव्यभाव ही रखकर–साधुता रखकर
सरलता वर्तना–सर्वोत्तम स्थिति है।
और तब–
पूर्णता ही प्रगटे
और
Final stage सिद्ध हुई मानी जाये।
तो,
यह **एकता व समता** दृढ़ करते जाना।
दूसरा क्या कर रहा है?
वह
जरा भी नज़र में नहीं लेना।
हमें
प्रभु को याद करके
उन्हें ही सब करने देना है।

शिकागो, 12-5-'-77

–प.पू. काकाजी महाराज

विज्ञप्ति.....

आप सभी ने दिल्ली मंदिर की मूर्तिप्रतिष्ठा व प्रभुस्वरूप प.पू. काकाजी के अमृतपर्व के महोत्सव की खूब राह देखी होगी..... क्योंकि 'भगवत् कृपा' के पिछले अंक में हमने सूचना दी थी कि यह function अब 13 अप्रैल' 1993 बैसाखी के महामंगलकारी दिन पर होगा। परन्तु प्रभु को ही सर्व कर्ता-हर्ता मानते हुए वर्तमान परिस्थितियों को स्वीकार करते हुए यह महोत्सव फिलहाल स्थगित कर देना पड़ा......

चूँकि संतमंडल जयपुर में बन रहीं संगमरमर की मूर्तियाँ जब लेने गया, तो वहाँ जाकर पता चला कि सभी मूर्तियों में (Final touch) घिसाई के पश्चात् काल-काले धब्बे दिखाई पड़े है। यद्यपि मूर्तियों का यूँ खराब हो जाना बहुत निराशा की बात थी, पर शिल्पी को भी दोषी नहीं ठहराया जा सकता क्योंकि सर्व कर्ता-हर्ता तो प्रभु ही हैं। भले हमें पता ना चले कि यह क्या हुआ....परन्तु प्रभु हमारा अहित तो करेंगे ही कैसे ? सो जो कुछ भी हुआ है वह हितकारी व मंगलकारी ही हुआ है और महाराज के ही शब्दों में–'हम सब तो नरनारायण के दास हैं व श्रीकृष्णनारायण की जो मरजी हो उसी में खुश रहना'–यही हमारे जीवन की शिस्त हैं।....मानो हमसे भजन कराने प.पू. काकाजी ने अनुग्रह करके 9 महीने अधिक समय ही क्यों नहीं दे दिया हो ! प.पू. काकाजी, जो हमारा चैतन्यमंदिर बनाने की इच्छा रखते हैं वह जल्दी से जल्दी तैयार हो जाए !

फिलहाल ऐसा विचारा है कि अब जब मूर्तियाँ पूरी तैयार होकर दिल्ली मंदिर में आ जायेंगी उसके पश्चात् ही मूर्तिप्रतिष्ठा व अमृत महोत्सव की तिथि निश्चित करेंगे और पत्रिका द्वारा आपको सूचित कर देंगे। आप सभी की असुविधा के लिए हम क्षमाप्रार्थी हैं।

❑ ❑ ❑

प्र. ब्र. स्व. प. पू. हरिप्रसादस्वामिजी महाराज आत्मीय महोत्सव के पवित्र अवसर पर.....

अहो हो ! आनन्द नहीं समाता....क्योंकि समग्र गुणातीत समाज 1 मई' 93 को कर्णावती में प्र.ब्र.स्व.प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी महाराज–आत्मीय महोत्सव का द्वितीय सोपान मनाने जा रहा है......

और सच ! अपने भाग्य का पार नहीं.....क्योंकि बिना कोई साधन, कठिन तपस्या, भजन, दान-व्रत किए बिना प्रभु ने केवल 'कृपा' में भगवान के अखंड धारक गुणातीत स्वरूपों का संबंध दे दिया है..... गुरुहरि योगीजी महाराज के वारिसस्वरूपों प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. जशभाई साहेब जैसे दिव्यपुरुषों ने आज मानवस्वरूपों में दिन-रात अविरत विचरण करके दर्शन, स्पर्श, सेवा, कथावार्ता का सुख–निरपेक्ष वात्सल्य का अस्खलित प्रवाह निरन्तर बहता ही रखा है, ताकि जाने-अनजाने जो भी उनके जोग में आये वह इस धोध में स्नान करके स्वयं का जीवन धन्य कर ले....इन स्वरूपों का जीवन और चरित्र दिल की सच्चाई से निहारना ही–अक्षरधाम के सुख, शांति, आनन्द प्राप्त करने का सर्वोपरि उपाय है और इससे भी अधिक इनके इन लीला चरित्रों, प्रसंगों व कथावार्ता के सूत्रों का विश्वासपूर्वक मनन-चिन्तन करके जीने की सुरुचि मात्र भी रखेंगे तो हम सब भी अवश्य निर्दोष, दिव्य और धन्य हो ही जायेंगे...भगवान श्रीकृष्ण ने भी गीता में कहा है कि–**'मेरे जन्म व कर्म को जो दिव्य मानकर गायेगा वह माया से तर जायेगा।'**

श्रीशुकदेव ने भी भगवान वेदव्यासजी को यही सूचन किया था कि 'पृथ्वी पर सदेहे विचरण कर रहे श्रीकृष्ण परमात्मा की लीला चरित्र का लेखन करो और गान करो, इतना ही तुम्हारा करना बाकी है।'

प.पू. स्वामिजी के बारे ? जिसे स्त्री, धन या मान का किंचित् राग, संकल्प, आसक्ति ही ना हो और जिसकी दस इन्द्रियाँ, चार अन्तःकरण में केवल एक सहजानन्द का ही निवास हो तथा जिसके पवित्र संकल्प व कृपादृष्टि से आज हजारों युवानों, संतों, बहनों और गृहस्थों शुद्ध पवित्र निर्व्यसनी, निष्कामी व प्रभुमय जीवन जी रहे हों वैसे स्वामिजी की विरल प्रतिभा का हम क्या और कितना वर्णन करेंगे ?

समग्र गुणातीत समाज के सब मुक्तों, भगवतस्वरूप संत के योग में आने के बाद जल्दी से जल्दी केवल प्रभु और संत के संबंध से व प्रभु के बल से जीते हो जाएँ, सिर्फ स्वयं और गुरुहरि की ओर सतत् नजर रखकर सच्चे अर्थ में सजग होकर बड़े संत की सिद्धांतिक प्रसन्नता प्राप्त कर लें तथा सारे गुणातीत समाज में सेवकभाव और सुहृद्भाव से खो जाकर स्वयं का जीवन धन्य कर लें–यही प.पू. स्वामिजी का संकल्प है, उमंग है।

तो आईये, हम सभी मिलकर प.पू. स्वामिजी द्वारा दिये सुन्दर व सचोट मार्गदर्शन के ब्रह्मप्रवाह से सारतत्त्व ग्रहण करके स्वयं को धन्य करें.....

'बहुत बार कई मुक्त मुझे प्रश्न पूछते हैं कि हमारी साधना आसान कैसे बनें? सुख-सुख से इस रास्ते कैसे आगे बढ़ा जाये ? साधना का कोई सरल मार्ग है ? तब मुझे कई बार विचार आया है कि भगवतस्वरूप संत के योग में आने के बाद साधक को स्वयं करनी पड़े ऐसी कौन-सी साधना बाकी रहती है ? यदि तुम इस मार्ग पर प्रभु को राजी करने एक डग भरो तो प्रभु सामने से दस कदम चलकर तुम्हारे पास दौड़ कर आएँ–ऐसे तो वे दयालु हैं !

श्रीजी महाराज ने हम पर खूब दया करके सचोट और ठोस ज्ञान हमें दिया है। गणित के formula जैसा ज्ञान हमें दिया है। एक में एक जोड़ने पर दो ही होता है और सूर्य उगने पर अंधेरा मिटता ही है– इसी परम सत्य जैसा और समाधानकारक ज्ञान महाराज ने हमें दिया है। प्रभु ने कल्याण की उधारी की बात तो कभी करी ही नहीं। प्रभु मिलने पर और उनकी बात समझने पर तो अखंड लाभ और अखंड मुनाफा ही है। अब तो हम अपनी गफलत के कारण, बालकबुद्धि के कारण, अज्ञान के कारण या आलस-प्रमाद के कारण कभी किंचित् खोट ना खाये इतना ही ध्यान रखना है।

प्रभु पृथ्वी के ऊपर पधारे और स्वयं के अद्‌भुत संबंध से सब को अक्षरधामरूप बना दिया। उन्होंने अर्चिमार्ग खुल्ला कर दिया.....

– अर्चिमार्ग यानी किसी भी प्रकार के विघ्न बिना का मार्ग।
– अर्चिमान यानी गड्ढों-पत्थर बिना का मार्ग।
– अर्चिमार्ग यानी ज्वार-भाटों के बिना का मार्ग।
– अर्चिमार्ग यानी बढ़िया, सरल, आसान और मुलायम मार्ग।

ऐसा अर्चिमार्ग महाराज ने खुल्ला रखा और बिना परिश्रम किये सब को अक्षरधाम का अधिकारी बना दिया। सिर्फ करुणा ही बरसा दी ! परन्तु यह करुणा का धोध कच्चे या फूटे बर्तन में टिकता नहीं। उसके लिए तो मजबूत और सुदृढ़ पात्र चाहिये।

महाराज ने ग.प्र. 62 के वचनामृत में आम व्यक्ति को भी आसानी से समझ में आ जाये ऐसी बात करी है। इस वचनामृत में महाराज ने कहा है कि सत्पुरुष के साथ बाप-बेटे जैसा सचमुच संबंध हो जाये तो उनके गुण सहज ही हम में आएँ। यूँ देखने जाएँ तो इस वचनामृत में महाराज ने सभी साधनों की पूर्णाहुति कर दी है, परन्तु हमें सही अर्थ में सेवक या लड़का बनना पड़े !

– प्रभु की सत्ता को स्वीकार करे उसका नाम सच्चा सेवक।

– प्रभु के वचन में पूरा विश्वास रखे उसका नाम सच्चा सेवक।

– केवल प्रभु की ओर दृष्टि रखकर जीवन जीये उसका नाम सच्चा सेवक।

ऐसे सेवकभाव का संबंध सही अर्थ में दृढ़ हो जाए तो सभी कल्याणकारी गुण उपलब्ध होंगे।

इससे भी अधिक, स्वामी की बातों में स्वामी ने ऐसा भी कहा है कि कोटि तप करके, कोटि जप करके, कोटि व्रत करके, कोटि दान करके और कोटि यज्ञ करके भी जो भगवान को तथा जो साधु को पाना था वे आज हमें मिल गए हैं। (स्वामी की बात : प्रकरण-1, 296) तो अब हमें करना बाकी क्या रहा ? अब तो बस विश्वास से नाव चलाना रहा। बड़े पुरुष के वचन में श्रद्धा और विश्वास नहीं होगा तो कभी भी तनिक भी आगे बढ़ नहीं पायेंगे। ऐसे विश्वास बिना जीव बलवान नहीं होगा, निर्दोष नहीं होगा और सुखी भी नहीं होगा।

बड़े पुरुष तो संबंध में आये हर कोई सुखी हो ऐसे अति उदार संकल्प सहित ही पृथ्वी पर आते हैं। श्रीजी महाराज भी करुणा करके संबंध मात्र से कल्याण करने पृथ्वी पर पधारे हैं और गुणातीत संतों द्वारा अखंड रहकर सभी को सौभाग्यवान– सनाथ बनाया है, अनाथपन का टोना टाल दिया है और एक बात अवश्य मानना कि तुम्हें सत्पुरुष के साथ जो प्रीति है उससे कई गुनी प्रीति सत्पुरुष को तुम्हारे साथ है। स्वामी ने बातों में भी कहा है कि हम मानते हैं कि हमे भगवान के साथ लगाव है, परन्तु हमसे अत्यधिक तो भगवान और साधु को हमारे ऊपर लगाव है। (स्वमी की बातें : प्रकरण-1, 197) सो, आप जितना उनका भजन करते होंगे या स्मृति करते होंगे उससे अधिक वे तुम्हारा भजन करते हैं और तुम्हें याद करते हैं। साधु तुम्हारे चैतयन्य की सच्ची माँ है। जैसे एक खानदान माँ केवल निरपेक्षभाव से अपने गंदे बच्चे को साफ करती है, उसके साथ प्रीति करती है, उसे सूझ देती है, वैसे ही सत्पुरुष का तुम्हारे साथ का प्रेम भी निरपेक्ष है। तुम्हारे चैतन्य के ऊपर चिपके अनन्त प्रकार के अहंता और ममता के स्वभाव के ढेर तथा पंचविषय की वासनारूपी मलिन गंदगी को खूब करुणा करके साफ करता है.....

शायद इस धरती पर हमें सब मिल सकता है। लक्ष्मी मिलेगी, समृद्धि मिलेगी, मान-बड़प्पन मिलेगा, लड़का-लड़की मिलेंगे, समाज मिलेगा, व्यवस्था मिलेगी। इस प्रकार सब कुछ मिलेगा, परन्तु भगवान के पवित्र, निर्मल संत की गोद नहीं मिलेगी और यदि ऐसे संत की गोद मिल गई तो हमारा जीवन धन्य हो गया ! जन्म-मरण के और गर्भवास के भयंकर रोग की पूर्णाहुति हो गई ! प्रभु की गोद में बैठने के बाद हमारी अनंतता की यात्रा की पूर्णाहुति !

तो, आज हम सचमुच दिल से प्रार्थना करें कि प्रभु के साथ का हमारा संबंध दृढ़ होता जाये और भगवतस्वरूप संत के साथ की प्रीति अधिक से अधिक बढ़ती ही जाए। जैसे-जैसे आसरा दृढ़ होता जाएगा वैसे-वैसे दासभाव प्रगट होता जाएगा। फिर तो किसा का अभाव नहीं आयेगा। 'सुहृद्भाव'– हमारा सहज स्वभाव बन जायेगा सो, हम ऐसा आसरा दृढ़ करें। सचमुच हम अंतर से ऐसी कोई सुरुचि रखें !

हमने कोई भी प्रार्थना सचमुच अगर दिल से करी हुई हो तो उसका जवाब प्रभु देंगे ही। वर्षों पहले ईसामसीह कह गए–each and every prayer is always answered. तुम्हारी प्रत्येक प्रार्थना प्रभु सुनते हैं और स्वीकारें। आप सब सच्चे दिल से ऐसी प्रार्थना कर पाओ, ऐसा सचमुच आप सबका संबंध हो इस हेतु महाराज, स्वामी, भगतजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी, अक्षरविहारीस्वामिजी और साहेब जैसे गुणातीत पुरुषों के चरणों में प्रार्थना !

सहजानंदस्वामी महाराज की जय.....

सर्वोपरि ज्ञानप्रलय —तूर्या और साम्यावस्थारूप माया

सामान्य ज्ञान और विशेष या एकांतिक व गुणातीत ज्ञान के बीच अत्यधिक फर्क है। स्थिति और प्राप्ति में भी फर्क रहता है। प्रकृति के कार्य, क्षेत्रों, उपाधियों और अनन्त आधारों से भरा माया का त्रिगुणात्मक स्वरूप है। महाराज ने शिक्षापत्री, वचनामृतों तथा अन्य सम्प्रदाय की पुस्तकों में जीव का स्वरुप जो अनादि अज्ञानयुक्त कारण शरीर युक्त बताया है वह जीव की ही माया है। ईश्वर की, अवतारों की और महापुरुष, प्रधानपुरुष वगैरा की उपाधियाँ, उनकी सत्ता, सामर्थ्य, ऐश्वर्य, गुणों और प्रभायुक्त महामाया के स्वरूप में जीव अखंड उत्पत्तिक्रम में जुड़ता है और महाकारण की संज्ञा को पाकर, जानकर, अनुभव करके जब स्वामिश्रीजी की शुद्ध उपासना करके सच्चे वड़वानल अग्नि समान संत का आसरा लेकर सर्वोपरि ज्ञानप्रलय करके निष्कामभक्ति करता है तब ही आत्यंतिक मुक्ति को पाता है। महामाया का दूसरा स्वरूप जिसमें तूर्यावस्था ही प्रधान रूप से होती है, वह तब जीती जाती है—उससे पर हुआ जाता है और जीव ब्रह्मसंज्ञा को पाता है तथा वासुदेव की निरन्तर भक्ति व उपासना किया करता है।

शुद्ध ज्ञानमार्ग खूब गहरा, मुश्किल और सूक्ष्म है। गुणातीत ज्ञान पचाने के लिए पात्रता, अधिकार और आसरे की उत्तम स्थिति निर्विकल्प निश्चय सहित अनिवार्य बनती है। उपशम दशा से पर साम्यावस्था रूप माया है। विभ्रान्त दशा भगवान या प्रगट संत के मिलने के बाद शुरु होती है। जहाँ साक्षात् अपरोक्ष प्रत्यक्ष ज्ञान है, स्वरूपों हैं वहीं परमपद की, आत्मनिष्ठा की साक्षात्कार की आखिरी स्थिति अनुभव होती है और प्राप्त होती है। वच. अंत्य प्र. 21 में महाराज ने धाम के पार्षदों से भी प्रगट सत्संगी की सभा को तथा हरिभक्तों को जिन्हें स्वामिजी का अनन्य आसरा हुआ है, उन्हें अधिक विशेष गिना है। इससे भी अधिक ब्रह्म और परब्रह्म की बातें साक्षात् प्रगट संत के द्वारा सिद्ध करनी—वह सिर्फ अनन्य भक्तों और एकांतिक गुण युक्त जो हो उन्हें ही होती है। वच. अमदाबाद-2, वच.ग.म. 30, 45, 21 वगैरा विचारना।

ब्रह्मसंज्ञा की अनन्त कोटियाँ हैं। भगवान के सिवा जो कोई इच्छा, संकल्प, भावना, आदर्श रहता है—वही एकांतिक के लिए माया है। भरतजी तथा अन्य मुक्तों इसी योगमाया में ही फंस गये थे। जहाँ शुद्ध गुणातीतज्ञान मूर्तिमान नहीं होता, वहाँ महामाया—महाकरण से परे ऐसी जो स्वयं की निर्गुणशक्ति के बल पर, भक्त को—

चतुर्धामुक्ति

या तो

ब्रह्मांडों कैसे चलते होंगे ? वगैरा सत्ता पाने की लालसा

या तो

भगवानरूप बनकर पूजे जाने का शौक

गुरु बनकर स्वयं के आशय को आगे रखने की चाहना,

खुद की ही रुचि अनुसार भजाने का आग्रह वगैरा योगमाया में फंसा देती है। भगवान भी काल, कर्म और उत्पत्तिक्रम की माया को भक्त के मार्ग में नहीं आना—ऐसा आदेश करते हैं। शुद्ध ज्ञानांश के वैराग्य को सिद्ध करके केवल महाराज के सिवा अन्य कोई आलंबन, आधार, आसरा, अवस्था बाकी नहीं रहे और सिर्फ महाराज को ही अखंड व

अविरतरूप से धारकर स्वामी सेवकभाव से मूलअक्षर के साधर्म्य को साक्षात् गुरुरूप हरि के द्वारा पाकर जो मुक्त सर्वोपरि उपासना दृढ़ करता है, उसे ही साम्यावस्थारूप माया बाधारूप नहीं बनती। अनन्त मुक्तों में ज्ञान का जो भेद रह जाता है, वही साम्यावस्था रूप माया का स्वरूप है। उसका लक्षण–जड़संज्ञा को पाना या तो कुसंग में लिपट जाकर सत्संग से गिर जाने का या तो बाधितानुवृत्ति में अखंड रहकर अधूरापन वगैरा गिना जाता है। इसीलिए महाराज ने वच. अत्यं. प्र.16,24 में बड़ों-बड़ों और परमहंसों तथा दादाखाचर, गोपाळानंदस्वामी, मुक्तानंदस्वामी भी कुसंग से उतरते जैसे रहे या नहीं उसमें शंका बताई है। यहाँ तक कि स्वतंत्र मुक्तों आये हों, उन्हें भी साधु तथा संतों गौण ना हो जायें इस हेतु साम्यावस्था रूप माया से बचना है। महाराज के समय में बारह भगवान हुए थे ! प्रगट ज्ञान के आसरे में जरा-सी चैतन्य शक्ति का आर्विभाव होते ही अभी भी कई-कितने ही भगवान होकर पूजे जा रहे हैं। यही योगमाया का स्वरूप है। जिसे माया से अखंड निर्लेपभाव है, वहाँ तनिक भी मायिकभाव, लौकिकभाव, ब्रह्म संज्ञाभाव है ही नहीं। ऐसे तो सिर्फ अनादि मूल अक्षर ही हैं और गुणातीतानंदजी द्वारा जो ज्ञान फैला वही माया से पर कर सकता है और वच.मध्य 45 के मुताबिक वासना निर्मूल करके स्वभाव या मूल प्रकृति टालकर अक्षररूप–ब्रह्मरूप करके पुरुषोत्तम में जोड़ता है। यहाँ धामरूप–अक्षररूप रहकर वच. लोया-12 के मुताबिक अंतिम निर्विकल्प निश्चय दृढ़ होता है व वच. प्र.27 और वच. अंत्य.प्र. 26 के मुताबिक महाराज साक्षात् अखंड रहते हैं और ऐसे संत द्वारा प्रगट विचरते हैं।

ऐसे स्वरूपों का संग ही ब्रह्मरूप बनाता है और वे मुक्तों भी सच्चे साधु के संग से ब्रह्म की ही मूर्तियाँ मानी हैं। परन्तु, चैतन्य का साक्षात् ज्ञान होने पर, दर्शन होने पर विभ्रांत दशा या उपशम के वेग में बहक ना जाए और साधु गौण ना हो जाये व सत्संग में एक सरीखी अखंड दिव्यता ही बहती रहे, इस हेतु ब्रह्मस्वरूप सत्पुरुष द्वारा वच. लोया-12 के मुताबिक अंतिम निश्चय करने की जरूरत रहती है और वच. कारियाणी 1,7 के मुताबिक देह रहते हुए ही पील्लु की भ्रमरी बनना पड़ता है। इससे भगवान की निर्गुण योगमाया में फंसते नहीं। ऐसे ब्रह्मस्वरूप के पास ही साम्यावस्थारूप माया का सदंतर अभाव रहता है और वहाँ ही उनके समागम से ब्रह्मरूप बन सकते हैं व ब्रह्मस्वरूप की अंतिम स्थिति सिद्ध होती है। अतः सभी को सत्पुरुष में आत्मबुद्धि करके उनके द्वारा ही सर्वोपरि भावना दृढ़ करके, उनके द्वारा ही साक्षात्कार ज्ञानप्रलय करना है। वच. मध्य 8, कारियाणी 7, पंचाला 7, प्रथम 51, प्रथम 24 वगैरा के मुताबिक ज्ञानयज्ञ की पूर्णता भी तभी मिली मानी जायेगी।

चिन्तामणि देह से परम चिंतामणिरूप साक्षात् वड़वानल अग्नि समान गुरुरूप हरि के द्वारा साक्षात् ज्ञानसमाधि में चिंतामणिरूप भगवान अखंड पा सकते हैं, ज्ञानप्रलय का अंत आता है। पुरुषार्थ का, कल्पना का और भावना का इस सर्वोपरि आदर्श में ही समावेश हो जाता है। वहाँ ज्ञाता, ज्ञेय और ज्ञानदर्शन के साथ ही एकरूप होकर ही एकत्व को पा जाता है और अहोहोभाव लगातार रहता है। महाराज का स्वरूप पर से पर कायम रहता है और अपार अनवधीकातिशय अमृत के महाधोध में निमग्न रहा जाता है। गुरुहरि सभी को ऐसा अलौकिक ज्ञान देह रहते हुए ही प्राप्त कराये और सिद्ध करा दें। ज्ञानप्रलय का दूसरा लेख–शास्त्र की रीत से तूर्या और साम्यावस्थारूप माया के मूल स्वरूपों, गुणों और प्रभा का वर्णन करता हुआ–नये वर्ष से मासिक के अन्य अंक में आयेंगे। तो सभी सत्संगियों को मेरी नम्र विनती है कि

'स्वामिनारायण प्रकाश' के कार्य को अधिक बढ़ता बनायें और प्रकृति से पर की परावाणी के महावाक्यों और अनुभवी लेखकों की सत्संगवाणी के मननीय लेख अखंड पढ़कर प्रगट की बातें और अंतर के रहस्यों को जानकर सत्संग कायम संभाले रखें। इसमें पू. स्वामिजी, गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज का तथा पू. योगीजी की अपार प्रसन्नता मिलेगी। हरेक सत्संगी 'प्रकाश' का नया एक ग्राहक बनाये और इस हेतु भले आधी शुल्क स्वयं दे करके भी प्रगट की अलौकिक सेवा करे, तो ज्ञानप्रलय की पूर्णाहुति जल्दी आयेगी ही इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है। तो मेरी नम्र विनती स्वीकार करके हरेक सत्संगी एक ग्राहक बना कर सत्संग की अनमोल सेवा करे। ज्ञानप्रलय में इस भूमिका का अनमोल स्थान है जो अन्य लेख में स्पष्ट बताएंगे। बेसमझदारी व देह रहते हुए अज्ञान टलते एक सत्संगी रस लेता हुआ प्रगट में जुड़े तो ब्रह्मांड उबारने का–तारने का फल महाराज देंगे ही। यूँ स्वामिनारायण प्रकाश को अधिक बढ़ता बनाने की–अधिक सजीव बनाने की खास जरूरत है और अब ही माया व महामाया के स्वरूप खुल्ले होंगे तथा सत्संग का अलौकिक सुख देह रहते हुए ही अनुभव होगा, भोगा जाएगा और अखंड प्राप्त होगा–यही प्रार्थना।

–प.पू. काकाजी महाराज
सितम्बर 1953

❄ ❄ ❄ ❄

विद्यार्थियों को पुरस्कार.....

आप सभी को जानकर आनंद होगा कि उत्तर भारत अर्थात् दिल्ली, उत्तर-प्रदेश, हरियाणा, जम्मू-काश्मीर, पंजाब, हिमाचल प्रदेश आदि में स्थित पहली से बारहवीं कक्षा के सत्संगी छात्र-छात्राएँ जिन्होंने–

अपनी कक्षा में प्रथम या द्वितीय स्थान प्राप्त किया हो

या

85 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त किये हों–उन प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को योगी डिवाइन सोसाईटी, दिल्ली द्वारा पुरस्कृत किया जायेगा।

सभी योग्य विद्यार्थियों से निवेदन हैं कि वे अपने परीक्षा-फल की प्रमाणित फोटोस्टेट प्रति निम्नलिखित पते पर 1 जुलाई 1993 तक जमा कराने की कृपा करें।

योगी डिवाईन सोसाईटी
अनिर्देश, अशोकविहार-III
स्वामिनारायण मार्ग, काकाजी लेन
दिल्ली-110 052

❑ ❑ ❑

PUBLISHED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,
A 103, Ashok vihar-III, Swaminararan Marg. Kakaji Lane,
Delhi-110 052. (India) Tel. : 7229327, 7249327
Printed at R.P., Printers, Shahadra, Delhi-110032